मुगलों का दक्कन नीति(1226–1707)

दक्कन का क्षेत्र उत्तर भारत से अलग कभी भी एक भौगोलिक इकाई नहीं रहा है। परंतु यह भी सच है कि इसे पार कर यहां की व्यवस्था पर नियंत्रण करना आसान भी नहीं रहा है और विंध्य की पहाड़ियां मार्ग में किसी शत्रु से कम नहीं है। इसके बाद भी यह क्षेत्र प्रारंभ से ही उत्तर भारत के शासकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। इसका मूल कारण वहां की समृद्धि और सुदृर व्यापार तंत्र था। ढक्कन सर्वप्रथम महान् मौर्य काल में उत्तर भारत की सत्ता के नियंत्रण में आया था। इसके पश्चात् गुप्त शासक समुंद्रगुप्त ने विजय अभियान चलाकर वहां के शासकों को अपने ध्वज के नीचे लाकर कर देने को विवश किया। मध्यकालीन भारत में अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों को जीता था और वहां के से अकूत संम्पत्ति लूटा एवं उसी के बल पर उसने तख्त पलटा कर दिल्ली सल्तनत पर का कब्जा किया। मुगल काल में बाबर और हुमायूं अपनी आंतरिक स्थिति में इस प्रकार से उलझे रहे कि उन्हें दक्षिण भारत की ओर अभियान करने का मौका ही नहीं मिला। अलबत्ता दोनों दक्कन कि आबोहवा से परिचित थे। बाबर ने तो अपनी आत्मकथा 'तुजुक–ए–बाबरी में दक्षिण भारत का वर्णन भी किया है। 1528 ईसवी में चंदेरी पर विजय प्राप्त करके बाबर ने मुगल साम्राज्य को मालवा की उत्तरी सीमा तक पहुंचा दिया था। दूसरी और बुरहान निजामशाह प्रथम के लगातार आग्रह के बावजूद हुमायूं दक्कन के मामलों में दखल नहीं दे पाया, क्योंकि वह बंगाल बिहार और गुजरात में उलझा हुआ था।

मुगलों का दक्कन अभियान अकबर के काल में शुरू हुआ और औरंगजेब के काल में वह चरण परिणति तक पहुंचा। मुगलों ने जब दक्षिण की ओर रुख किया जो उस समय वहां सात प्रमुख शक्तियां थी– खानदेश, बीजापुर गोलकुंडा, अहमदानगर, बरार, बीदर और मराठी। औरंगजेब के बाद कोई भी मुगल शासक इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह दक्कन को अपने नियंत्रण में ले पाए।

प्रायाः यह माना जाता है कि मुगलों ने अपने विस्तारवादी नीति के कारण ढक्कन कि ओर अभियान किया। औरंगजेब द्वारा दक्कन पर पूर्ण नियंत्रण के बाद जब मुगल साम्राज्य का पतन होने शुरू हुआ, तो यह माना जाने लगा कि दक्कन पर नियंत्रण से मुगल साम्राज्य प्रशासनिक और राजनीतिक दोनों तरह से अप्रबंधनीय हो गया और औरंगजेब ने एक विशाल अजगर की तरह इतना खा लिया कि वह उसे पचा नहीं पाया। यहीं से मुगलों की दक्षिण नीति को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण का जन्म हुआ।

अबुल फजल ने लिखा है कि दक्षिण भारत में अच्छा शासन देना अकबर की नैतिक जवाबदेही थी और इसी के कारण उसने दक्कन की और अभियान कर वहां के शासकों के पास अपने दूत भेजे थे और अपने नियंत्रण में लेने के लिए अभियान चलाया। परंतु यह उसके अभियान का एकमात्र कारण नहीं हो सकता है, क्योंकि कोई भी शासक दक्कन अभियान का जोखिम इस कारण नहीं ले सकता था। सही अर्थों में देखा जाये तो मुगलों के दक्कन नीति के पीछे कई जटिल कारक रहे हैं। इनमें सर्वाधिक प्रमुख शाही संसाधनों को बढ़ाने का दबाव था। मुगल उमरा वर्ग की संख्या को देखते हुए यह लग रहा था कि जागीरदारी संकट का समाधान जरूरी था और इसकी पूर्ति उत्तर भारत से प्राप्त संसाधनों से नहीं की जा सकती थी।

अकबर के काल में 1590 के दशक तक असम को छोड़कर संपूर्ण उत्तर भारत मुगल नियंत्रण में आ चुका था अतः स्वभाविक था कि उसका अभियान दक्षिण भारत की और होता और उसने या अभियान किया भी। यदि विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त मुगल राजस्व का आकलन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दक्षिण भारत को शामिल करने से कुल जमा में अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई। केवल बरार और खानदेश पर कब्जा करने से मुगल राजस्व में 18 प्रति ात की वृद्धि हुई। इसी प्रकार शाहजहां के काल

में 1646 से 1656 के बीच दक्कन क्षेत्र से प्राप्त आय कुल मुगल आय का 21 प्रति ात था और औरंगजेब के अंतिम दौर में यह 32 प्रति ात था।

दूसरी ओर समुद्री मार्गो पर दबदबा और समुद्री व्यापार पर नियंत्रण भी जरूरी था। साथ ही जिस तरह से पुर्तगाली एक शक्ति एक रूप में उभर रहे थे, उनकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती थी।

इस प्रकार मुगलों की दक्कन नीति एक साथ कई जरूरतों को पूरा करती थी। इससे मुगल प्रभाव में वृद्धि हो रही थी और दक्कन पर मुगल सार्वभौमिकता स्थापित हो रहा था। साथ ही मुगल राजस्व में वृद्धि भी हो रही थी और राज्य की आर्थिक एवं राजनीतिक हितों को साधित भी किया जा रहा था। आर्थिक संसाधनों को लेकर जो संकट उत्पन्न हो रहा था, वह भी पूरा हो रहा था।

मुगल काल का भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय इतिहास का एक बड़ा भाग मुगलों की नीतियों से प्रभावित रहा है और कमोबेश आज का भारत भी मुगलों के प्रभाव से अछूता नहीं है। मुगलों की दक्षिण नीति का उल्लेख कई ग्रंथों में हुआ है। परंतु उपयुक्त शोध विषय की संपूर्णता को प्रदर्शित करने वाला कोई भी एक साहित्य उपलब्ध नहीं है। फिर भी कई पुस्तकों को में मुगलों की दक्षिण नीति का विवरण मिलता है। कुछ ग्रंथ प्राथमिक साक्ष्य के रूप में उपलब्ध हैं तो कुछ द्वितीयक साक्ष्य के रूप में। मुगल कालीन इतिहास लेखन परंम्परा के ग्रंथ अबुल फजल कृत अकबरनामा, निजामुद्दीन अहमद की 'तबकात–ए–अकबरी, बदायंनी की 'मुन्तखाब–उल–लुबाब, हातिम खा की 'आलमगीरनामा' भीमसेन कृ त 'नुस्ख–ए–दिलकु ाा जैसे ग्रंथ में मुगलो की दक्षिण नीति पर प्रका ा पड़ता है। इसके अलावे इलियट एण्ड डाउसन ने जो आठ भागों में मुगल काल का विवरण 'हिस्ट्र ऑफ द मुगल इम्पायर मनुची की 'स्टोरिया दि मगोर', टवर्नियर की 'ट्रेवेल्स इन इंड़िया में भी दक्षिण नीति का विवरण दिया है।

विश्लेषणात्मक ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक विधि का उपयोग इस शोध कार्य में किया जाएगा। साथ ही इस शोध को पूरा करने में आलोचनात्मक एवं अवलोकनात्मक विधियों का भी सहारा लिया जाएगा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से इस शोध कार्य को पूरा किया जाएगा।

ढक्कन के राज्य आपस में झगड़ रहे थे और उनके बीच खूनी संघर्ष चल रहा था। मुगलों की दक्कन में प्रवेश से न केवल उनके आपसी झगड़े शांत हुए, बल्कि एक शक्ति संतुलन की बात हुई। मुगल सुन्नी थे और दक्षिण के शासक सिया। अतः इस अध्ययन से यह स्पष्ट हो सकेगा कि क्या मुगलों का दक्कन अभियान सुन्नियो द्वारा सिया शासकों के दमन का था? या हिंदू मराठों के दमन का था। इस विषय को जानकर संम्प्रति जो विवाद की स्थिति कभी–कभी उभरती रहती हैं उसका समाधान खोजा जा सकता है और सौहार्द्र का वातावरण तैयार किया जा सकता है। इस बात को रेखांकित करना निहायत जरूरी है। साथ ही मुगल काल के दौरान उत्तर भारत में रहने वाले मुसलमान और दक्षिण भारत में रहने वाले मुसलमानों के अंतः संबंधों की व्याख्या और उनके बीच के सामाजिक–संस्कृति गतिशीलता को इस शोध से रेखांकित किया जा सकता है।